Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–335

B.A. (Part–III) (NC) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबंध एवं भाषा)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर सीमा **50** शब्द) :

(i) हिन्दी निबंध इतिहास का काल विभाजन कीजिए।

(ii) शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबंधकारों के नाम बताइए।

(iii) 'जीने की कला' निबंध का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(iv) द्विवेदी युगीन निबंधों की प्रमुख विशेषता बताइए।

(v) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख निबंधों के नाम बताइए।

(vi) आधुनिकता : नयी और पुरानी निबंध के आधार पर 'आधुनिकता' को स्पष्ट कीजिए।

(vii) प्रताप नारायण मिश्र मनोविकार संबंधी निबंधों के नाम बताइए।

(viii) 'क्रोध' क्या है आचार्य शुक्ल के निबंध 'क्रोध' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ix) देवनागरी लिपि का सामान्य परिचय दीजिए।

(x) भाषा से आपका क्या आशय है ? परिभाषित कीजिए।

खण्ड–ब

प्रत्येक 8

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है जिससे हमें दु:ख पहुँचा है उस पर यदि हमने क्रोध किया है और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है, पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुये शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्राय: नहीं देता, पर वैर उसके लिये बहुत समय देता है।

3. नाखून हमारे अन्दर की पशुता की निशानी है। यह बार-बार बढ़ते रहेंगे और हम इन्हें बार-बार काटते रहेंगे, तभी तो इनकी वृद्धि पर अंकुश लगा सकेंगे। सच ही है कभी किसी जमाने में बड़े नाखून काटने पर डाँटते होंगे, क्योंकि तब वे हमारे जीवन-रक्षा के उपाय थे। आज हमें इनकी हथियार के रूप में

आवश्यकता नहीं है। हमारे पास अति आधुनिक और प्रभावशाली हथियार हैं। मनुष्य यह समझता है कि नाखून काट देने मात्र से वह सभ्य, मानवीय, सुसंस्कृत हो जायेगा लेकिन लेखक के अनुसार जब तक हम हथियारों के बल पर दूसरों को मौत के घाट पर उतारते रहेंगे, तब तक निरे पशु ही रहेंगे, ऐसे में नाखून काटने से कुछ नहीं होगा।

4. जब दाँतों के बिना पुपला-सा मुँह निकल आता है तो चिबुक (ठोड़ी) एवं नासिका एक में मिल जाता है उस समय सारी सुघराई मिट्टी में मिल जाती है। नैन बाण की तीक्ष्णता, भ्रूचाप की खिंचावट और अलकपन्नगी का विष कुछ भी नहीं रहता। कवियों ने इसकी उपमा हीरा, मोती, माणिक से दी है वह बहुत ठीक है बरंच यह अवयव कथित वस्तुओं से भी अधिक मोल के हैं। यह वह अंग है जिसमें पाकशास्त्र के छहों रस एवं काव्यशास्त्र के नवों रस का आधार है। खाने का मजा इन्हीं से है।

5. यदि हम रंग और उनके मिश्रण के विषय में जान लें, तूलिका आदि के विषय में सब कुछ समझ लें, परन्तु कभी इस ज्ञान को प्रयोग की कसौटी पर कसें तो हमारी चित्रकला-विषयक ज्ञान परीक्षा के बिना अपूर्ण ही रह जायेगा। इसी प्रकार यदि हम ज्ञान के बिना ही एकाएक रंग भरने का प्रयत्न करने लगे तो हमारा यह प्रयास भी असफल ही कहा जायेगा। चित्रकला की पूर्णता के लिये और सफल चित्रकार बनाने के लिये हमें तत्संबंधी ज्ञातव्य को जानकर प्रयोग में लाना ही होगा। यही अन्य कलाओं के लिये भी सत्य सिद्ध होगा।

6. आदमी और पेड़ में यही अन्तर है कि पेड़ स्वभाव से परार्थी हैं, आदमी स्वभाव से स्वार्थी है। तमाल एक काला काठ है उकठा हुआ, उसकी झुर्रियाँ गाँठ बन चुकी हैं। वृन्दावन के निधुवन में एक तमाल का पेड़ है, उसे शायद बिजली चीर गई है, आधा पेड़ एकदम सूख गया है पर अभी भी एक डाल है जिसमें पत्ते हरे हैं। जाने कौन जीवन की दुर्दम्य आकांक्षा उसे हरा रखे हुये है। मृत्यु की यंत्रणा को कैसे झेला जाता है, यह बस तमाल से कोई सीखे। आजकल जब इसके पोर-पोर का दर्द उभर रहा है, पोर-पोर की नसें टूट रही हैं, मृत्यु इसके समूचेपन को मथ रही है, तब यह कल्पना भी नहीं होती कि इस पेड़ में कभी जीवन आयेगा।

7. स्वतन्त्रता का ही एक आयाम समता है क्योंकि उसके बिना व्यावहारिक अर्थों में स्वतन्त्रता अपूर्ण रहती है। समकालीन साहित्य में स्त्री-पुरुष असमानता, दलित वर्ग के दमन-शोषण और सामन्तवादी पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आर्थिक-सामाजिक शोषण और अन्याय के चित्र बिखरे पड़े हैं। यथार्थवाद के बढ़ते आग्रह के कारण आदर्श चरित्रों की सृष्टि से भावात्मक विश्वसनीयता पैदा नहीं हो पाती है और वह चरित्र और स्थितियाँ कृत्रिम लगने के कारण प्रभावहीन हो जाती है।

8. मनुष्य भौतिक पदार्थों की भांति जड़ नियमों के बन्धन में रहता है यदि उसने अपनी वैज्ञानिक बुद्धि के बल पर उन नियमों पर बहुत अंशों में विजय प्राप्त कर ली है तथापि वह उनकी नितान्त अवहेलना नहीं कर सकता। मानवी बुद्धि की चरम सफलता के द्योतक वायुयान भी अचल होकर गगन-मण्डल में स्थित नहीं रह सकते। शीतोष्ण और क्षुप्ति पिपासा आदि आवश्यकताओं से भी वह अपना पीछा नहीं छुड़ा सका। मनुष्य सत् होने के नाते मिट्टी के ढेले की भांति प्राकृतिक नियमों में बंधा हुआ है और सजीव होने के नाते आहार निद्रा, भय, मैथुन आदि प्राणिशास्त्र संबंधी आवश्यकताओं में पशुओं का समानधर्मी है।

खण्ड–स

प्रत्येक 20

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है :

9. हिन्दी निबंध साहित्य इतिहास के उद्‌भव और विकास पर विस्तार से प्रकाश डालिये।

10. बालकृष्ण भट्ट के निबंध लेखन का परिचय देते हुये उनके बहुचर्चित निबंध 'मन की दृढ़ता' की मूल भावना को स्पष्ट कीजिये।

11. नंदकिशोर आचार्य के निबंधों की विशेषताएँ बताते हुये उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये।

12. कुबेरनाथ राय की निबंध-शैली पर प्रकाश डालिये।